Vol 4 Issue 10 July 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
ISSN 2249-894X

Impact Factor : 3.140(UIF)
Volume - 4 | Issue - 10 | July - 2015

डॉ. रामनिवास 'मानव' के साहित्य में समाजिक चेतना और मनोविज्ञान

कृष्णा देवी सुपुत्री श्री चम्बा राम

सारांश :

डॉ. रामनिवास 'मानव' एक नये समाज के रचनाकार हैं, जो अपने युग की पारम्परिक चेतना के विरूद्ध आवाज बुलन्द करते हैं। यह वर्तमान व्यवस्था में निहित मौकापरस्ती के खिलाफ विद्रोही हो जाते हैं। परिस्थितियों से समझौता न करना इनके व्यक्तित्व का अहम हिस्सा है। साहित्य में नित नये प्रयोग करना इन्हें बखूबी भाता है। इनका काव्य सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक ढांचे में परिवर्तन का वाहक बनकर उभरता है। डॉ. 'मानव' का बहुमुखी व्यक्तित्व सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश तो प्रकट करता ही है, लोकतन्त्र की उन व्यवस्थाओं पर भी चोट करता है, जहां मानवीय अस्मिता, अन्याय और शोषण का शिकार हुई है। यह यन्त्रवत् जीवन के प्रति उदासीन हैं। परिवर्तन अवश्यम्भावी हैं, इसी प्रकार से डॉ. 'मानव' जिन्दगी को चुनौती के रूप में जीते हैं। यह अपने से पूर्व की काव्य–श्रृंखला को झुठलाते हुए, चुनौती के रूप में, साहित्य में प्रयोग करते हैं।

Short Profile
Krishna Devi suputri Shri Chamba Ram
VPO - Madhosinghana , Sirsa (Haryana)

प्रास्ताविका :

हिन्दी साहित्य में विशेषतः रामनिवास मानव के साहित्य के स्वरूप, संदर्भ तथा आयामों का एकत्रा संदर्श नहीं हो पाया है। प्रायः किसी एक प्रवृत्ति विशेष अथवा कवि विशेष पर ही अनेक शोध कार्य हुए हैं। प्रस्तुत प्रयास मनोविज्ञान के भारतीय एवं पाश्चात्य एतद्विषयक मतों का संहार करते हुए रामनिवास मानव के संदर्भ में निरूपित किया गया है। वस्तुतः रामनिवास मानव के साहित्य को श्रृंगार, साहित्य–कला इत्यादि आयामों तक सीमित रखा गया तथा किसी कृति के मूल में निहित कृतिकार की 'तलाश' अदृष्ट रही और उसके अंतःमंथन का प्रयास नहीं हो पाया। डॉ. 'मानव' के व्यक्तित्व का एक पहलू यह भी है कि यह केवल अपनी वेदना और पीड़ा के विषय में ही नहीं सोचते, इनमें विश्व की पीड़ा के लिए कारण है कि इनके साहित्य में दीन–हीन, पीड़ित गरीबों, असहाय विवश प्राणियों और परम्परा में जकड़ी नारियों के कल्याण के स्वर मुखर रहे हैं। मानवतावादी भाव इनके साहित्य की मुख्य प्रेरणा हैं। लोकमंगल की भावना इनके साहित्रू में सर्वत्र विद्यमान हैं।

डॉ. रामनिवास 'मानव' ने अपने काव्य में मानव–मूल्यों और सामाजिकता का पूर्ण निष्ठा, लगन और साहसपूर्ण ढंग से व्यक्त किया है। सम्पूर्ण काव्य में आम आदमी को केन्द्र मानकर उसे प्रतिष्ठापित करने का सहारनीय प्रयास इन्होंने किया है। परिणाम स्वरूप इनका काव्य मानव–मात्र का हिताभिलाषी बनकर उसके साथ चलता है, उसे नित नये आयाम सीपित करने को प्रेरित करता हैं। डॉ. 'मानव' का मन वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक परिदृश्य के कारण खिन्न है। वह एक सम्पूर्ण क्रांति की कामना करता है। तुष्टिकरण की नीतियां उसे प्रताड़ित करती हैं और वह व्यवस्था को पूरी तरह परिवर्तित करने की प्रेरणा देता हैं–

पक्ष धरे पाखंड का, झूठी करे दलील।
कल्वर को पंचर करे, वही तो प्रगतिशील।।

डॉ. 'मानव' ने, युग की यथार्थ को सशक्त जटिलताओं को जीवन का यथार्थ मानकर, कविता को उसकी समग्रता में बुनने का प्रयास किया हैं। युगबोध की अभिव्यक्ति ने, डॉ. 'मानव' के काव्य को, जीवन्त और प्राणवान बनाया है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक कुप्रथाओं एवं कुव्यवस्थाओं में छअपटाते आम आदमी का सहारा बनकर सामने आता है डॉ. 'मानव' का साहित्य। इसलिए दनके काव्य को 'यथार्थ का दर्पण' भी कहा जा सकता है। कवि का मानना है कि नेता, नीतियां, तन्त्र, सब देश को लूटने का यन्त्र बनकर रह गये हैं। डॉ. 'मानव' के काव्य को पढ़ते हुए हम सीधे उस यथार्थ से टकराते हैं, जिसे हम दैनिक जीवन में जीते हैं। 'रश्मि–रथ' संग्रह की 'सार्थकता', 'कैक्टस', 'जीवन–भूमि का युद्ध', 'कटघरे का बयान', 'सांप', सड़कः दो परिभाषाएं, आदमी का अवमूल्यन, शहतूत और मैं, आदि कविताएं जीवन–यथार्थ से जुड़ी हैं, जिनके माध्यम से, कवि ने आदमी के अवमूल्यन, टूटते जीवन–मूल्यों, महानगरीय सन्त्रास आदि का यथार्थ चित्रण करके, पाठकों को इनसे अवगत करवाया है। स्वार्थों की पूर्ति के लिए ये राजनेता किसी भी नीति, किसी भी सिद्धान्त का परित्याग करने में जरा भी नहीं हिचकते। राष्ट्रपिता के नाम का दुरूपयोग कर, दोनों हाथों से देश का लूटने में लीन हैं–

राजनीति ने यह किया, सबसे पहला काम।
सरेआम बेचा गया, बापू तेरा नाम।।

VPO- *माधोसिंघाना, सिरसा (हरियाण)*

डॉ. 'मानव' ने जहां पारिवारिक सम्बन्धों की गरिमा को बनाये रखने की प्रेरणा अपने बालगीतों द्वारा दी हैं, वहीं इन्होंने सामाजिक सम्बन्धों पर भी सहज कार्य करने का सद्प्रयास किया है। 'डाकिया' और 'मदारी' जैसे बालगीतों के माध्यम से, इन दोनों के प्रति, आस्था और श्रद्धाभाव बनाये रखने का मनोनुकूल प्रयत्न किया है। इन दोनों व्यक्तियों का सामाजिक स्तर पर बहुत महत्त्व है, उनके महत्त्व को दर्शाते हुए कवि, डॉ. 'मानव' लिखते हैं–

डाकिया डाक छांटता रोज,
डाकिया डाक बांटता रोज।
चिट्ठी कभी तार वह लाता,
आंसू कभी प्यार वह लाता।

डॉ. रामनिवास 'मानव' के बालगीतों का सम्पूर्ण रूपसे अध्ययन करने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इनमें विषय की विशिष्टता को महत्त्व दिया हैं। इन गीतों मं एक विशिष्ट आयु–वर्ग के बच्चों में संस्कार एवं जीवन–मूल्यों के प्रति आस्था जागृत करने का प्रयास किया गया है, परिणामस्वरूप इनका बालगीत–साहित्य मूल्यपरक है और बच्चों को संस्कारवान बनाने में समर्थ है। डॉ. रामनिवास 'मानव' ऐसे अनुभवसमृद्ध लघुकथाकार हैं, जिनकी रचनाओं का फलक व्यापक है। आलोच्य संग्रह की लघुकथाओं का कलेवर भले ही छोटा हो, लेकिन उनका सम्प्रेषण विराट है, गढा हुआ है। 'अनलौटे श्रीराम' इस संग्रह की पहली लघुकथा है, जिसमें, पति–पत्नी के मध्य विचारों की भिन्नता के कारण, रिश्तों में पड़ी दीवार की और संकेत किया गया है। लेखक ने पत्नी की गलत सोच पर चिन्ता प्रकट की है तथा व्यंग्य किया है। यह घर–परिवार की बदल रही स्थितियों को स्पष्ट करती है कि वर्तमान में, बेटा किस प्रकार अपनी पत्नी की गलत सोच से समक्ष समर्पण कर, अपने दायित्व से च्युत हो जाता है। 'अनलौटे श्रीराम' के रामचन्द्र और सीता की जिस विवशता को, जिस मजबूरी को, जिस आर्थिक स्थितिक को रचनाकार ने चित्रित किया हैं,वह उन जैसे अनेक लोगों के जीवन का यथार्थ हैं। कटु सत्य यह है कि आज की सीता अपनी सीमाओं में जकड़ गई हैं कि अब वह घर और घर के लोगों से दूर ही रहना चाहती है– "सीता घर जाने को बिल्कुल तैयार नहीं हुई। अकेले अयोध्या जाकर रामचन्द्र जी भी क्या करते! उन्हें लगा जैसे वनवास का एक वर्ष और बढ़ गया है।"

डॉ. 'मानव' ने विविध प्रकार की लघुकथाएं हैं। उनमें सामाजिक जीवन यथार्थ प्रकट होता है। यह यथार्थवादी दृष्टिकोण से, सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना का प्रखर रूप प्रस्तुत करते हैं, जिससे समाज की वास्तविक परिस्थित का परिचय मिलता है। डॉ. 'मानव' का लघुकथा संसार सामाजिकता को मानवीयता के सशक्त धरातल पर प्रधानता देता हुआ चलता है। इसी क्रम में जहां इन्होंने शोषण के विरूद्ध अपना प्रबल आक्रोश व्यंग्यात्मक तेवर के साथ प्रकट किया है, वहीं मध्यम वर्गीय आवरणों पर गहरी चोट भी की है। इनकी लघुकथाएं किसी साहित्यिक वाद–विशेष से सम्बन्ध नहीं रखती। मानवीय संवेदनाओं के प्रति प्रतिबद्ध होने के कारण, इनकी लघुकथाएं किसी वर्ग का चित्रण नहीं करती हैं, अपितु लघुकथाओं में शोषितों की व्यथा, अर्थाभाव से उत्पन्न संघर्ष, प्रेम–भावना आदि का चित्रण हुआ हैं। 'बाप बनने की मिठाई' समाज के चारित्रिक पतन की पराकाष्ठा को व्यक्त करती हैं। 'नरेन्द्र की घर वापसी' और 'दिवाली की मिठास' में रिश्तों के ठंडेपन, खोखलेपन और रक्त–सम्बन्धों में आई गिरावट को उकेरा गया हैं। 'एकमुश्त समाधान' में, एक युवती विवाह के लिए भैया तथा पिता की परेशानियां देखकर, आत्महत्रा का निश्चय करती है। इस लघुकथा में, लेखक ने, मंडल–कमीशन के दुष्प्रभाव को दिखाना चाहा हैं। 'बहाना' द्वारा सामजिक सरोकारों के प्रति प्रतिबद्धता और नैतिक जिम्मेदारी निभाने के चारित्रिक गुण को बखूबी बताया है। 'सन्दर्भ–गोलीकांड' द्वारा ऐसे वर्तमान पीत–पत्रकारिता एवं दायित्वहीनता से ग्रस्त पत्रकारों की मानसिक दशा का स्पष्ट किया गया हैं। साहित्यकार समाज में रहते हुए जो कुछ अनुभव करता है और जो उसको संवेदित होता है उसी को ही शब्दों का लिबास पहनाकर रचना प्रस्तुत करता है। साठोत्तरी कविता में कवि डॉ. 'मानव' ने अपना एक अलग सा व्यक्तित्व निर्माण किया है। उनकी कविताओं में आज की सामाजिक, आर्थिक विषमता, राजनीतिक मोहभंग और धार्मिक कट्टरता के परिणामस्वरूप समाज का ढ़ाँचा किस प्रकार बदलता जा रहा है उसको अभिव्यक्ति मिली है। कवि डॉ. 'मानव' की मार्क्सवाद में अटूट आस्था है, लेकिन वे कट्टर मार्क्सवादी नहीं है। शोषण, अन्याय और गरीबी से ग्रसित इस मुल्क के लिए वे मार्क्सवाद को उपयोगी मानते हैं। देश की शिक्षण–संस्थाओं के गिरते चरित्र और शिक्षकों द्वारा अपनाये जाने वाले निम्नस्तरीय हथकंडो को बड़े सहज एवं स्टीक ढंग से स्पष्ट करने का सफल प्रयास किया गया हैं। 'आतंकवादी' में भी राजनीतिक चरित्र को विषय बनाया गया है, जिसके माध्यम से यह दिखाने का प्रयत्न हुआ है कि नेता लोग किस प्रकार से दंगा भड़काकर, जनता का ध्यान वास्तविक राष्ट्रीय समस्याओं से विमुख करते हैं। 'शांति के द्वीप' साम्प्रदायिक दंगों से ग्रस्त एक मोहल्ले की कहानी है, जिसमें बताया है कि गुंडा किस्म के खुंखार लोग जहां सारे शहर में दंगा–फसाद मचा रहे थे, वहीं वे अपने पड़ोस में बसे एक अल्पसंख्यक परिवार की सुरक्षा के लिए स्वयं पहरा दे रहे थे–"देख्ते हैं, अब कौन माई का लाल ईधर आंख उठाकर देखता है। हमारी बस्ती में, हमारे होते हुए, तुम्हें कोई कुछ कह गया, तो हम बिना मरे ही नहीं मर जायेंगे।"

डॉ. रामनिवास 'मानव' की लघुकथाओं में सामाजिकता को प्रमुखता मिली है। इन्होंने समाज के विभिन्न पक्षों और पहलुओं को विषय बनाया है। डॉ. पुष्पा बंसल के शब्दों में– "डॉ. रामनिवास 'मानव' की लघुकथाओं की प्रमुख विशेषता यह है कि आज की अन्य थोक के भाव उत्पादित हो रही लघुकथाओं के समान इनमें भ्रष्टाचार, दुराचार की प्रवृत्ति नहीं है। प्रायः सभी लघुकथाओं में मानव की मनोविज्ञानाधारित विड़म्बना उभरती है।"

भारतीय समाज सम्बन्धों का आईना है। एक सजग साहित्यकार इन पारिवारिक–सामाजिक सम्बन्धों के अनुपम तालमेल द्वारा अपने साहित्य की यथार्थ संरचना करता हैं। डॉ. रामनिवास 'मानव' एक समर्थ कथाकार है। सम्बन्धों का चित्रण करने में इनका कोई सानी नहीं है। इनकी लघुकथाएं सामाजिक सम्बन्धों की बोलती तस्वीरें हैं। सम्बन्ध चाहे कैसे भी हों, पारिवारिक हों या दाम्पत्य, वैध हों या अवैध, उनमें आई स्वार्थपरता, संवेदनहीनता, दिखावा, विरक्ति, खोखलापन, सभी की झलक डॉ. 'मानव' की लघुकथाओं में देखने को मिलती है। पिता–पुत्र, पति–पत्नी के रिश्तों में आये दिखावे, आडम्बर और खोखलेपन को लेखक ने, अपनी लघुकथाओं के माध्यम से, व्यक्त किया है। आज के युवावर्ग के लिए घर–परिवार एक बोझ बन चुका है, यहां तक कि उन्हें अपने माता–पिता तक की भी चिन्ता नहीं होती। आज का युवा जब शहर में नौकरी करने लगता है, तब वह अपनी जड़ और जमीन से कट जाता हैं। डॉ. 'मानव' के

साहित्य को गरिमा प्रदान करती हैं। डॉ. 'मानव' की साहित्य–यात्रा की अनेक दिशाएं हैं। यथा– कविता, गीत, गजल, दोहा, लघुकथा, शोध, समालोचना और सम्पादन द्वारा इन्होंने साहित्य की सेवा की है, वहीं यह, सामाजिक सरोकारों के कारण, आयोजक, संचालक, प्राध्यापक, पत्रकार और जनसेवक जैसे स्वरूपों में, व्यापक स्तर पर, सामाजिक दायित्वों का निर्वाह भी करते रहे हैं। परिश्रम, आत्मनिष्ठा, दृढ़ता, लोकमंगल की भावना जैसे तत्त्वों ने इनके व्यक्तित्व को ऊंचाई प्रदान की हैं।

डॉ. रामनिवास 'मानव' के साहित्य का संसार बहुत विस्तृत है इनकी तीक्ष्ण बुद्धि और सूक्ष्म दृष्टि से जीवन और जगत का कोई भी क्षेत्र नहीं छूटा है। इन्होंने अपने साहित्य में हर वर्ग, हर क्षेत्र का चित्रण है इनमें प्रत्येक तरह के पात्र हैं, जिनके माध्यम से, आज का सारा युग–संघर्ष चित्रित हुआ है।

lanHkZ lwph %

1.सांझी है रोशनी, पृ. 72
2.बोलो मेरे राम, पृ. 16
3.आओ, गाओ बच्चों, पृ. 42
4.घर लौटते कदम, पृ. 16
5.इतिहास गवाह है, पृ. 68
6.डॉ. रामनिवास 'मानव': सृजन के आयाम, पृ. 351

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org